यह एक ऐसे बच्चे का मार्मिक वृत्तान्त है जो सिर्फ अपना बचपन ही नहीं खोता जा रहा बल्कि अपनी मां का दिया नाम भी भूलता जा रहा है अर्थात व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान खो रहा है । क्या इस बच्चे से हमारा कोई सरोकार नहीं है ?

बच्चा कहां बैठता होगा ?

❑ सुभाष गाताड़े

किचन से बैडरूम
बैडरूम से घर के बाहर टंगी रस्सी तक,
घर का फर्श चमकाने से लेकर
शाम को बॉबी को घुमाने तक,
अभी यहां आलमारी पोंछते हुए
झट् से उधर मालकिन की चप्पलों को ढूंढते हुए
इधर से उधर
उधर से इधर
यहां से वहां
वहां से यहां
यह बच्चा
जिसकी उम्र समूचे घर के लाड़ले बॉबी से
चन्द साल ही बड़ी है,
इस घर में आप को हर जगह मिल जाएगा

मैंने शायद ही कभी उसे बैठे देखा है,
अभी मालकिन की बूढ़ी मां के लिए
पूजा का सामान निकाल रहा था
तभी मालिक के दोस्तों के लिए
सिगरेट लाने दौड़ पड़ा
बाहर की गुमटी तक,
अभी बॉबी के खिलौने सजा रहा था
तभी उसकी गीली चड्ढी उतारने के लिए दौड़ पड़ा,

इस घर ने उसे कई नाम दिये हैं,
छोटू, कालू, कलुआ, बिहारी,
मालकिन जब बासी रोटी और
कान टूटी कप में चाय का नाश्ता
उसे पकड़ाती रहती है
तब कभी कभी उसे

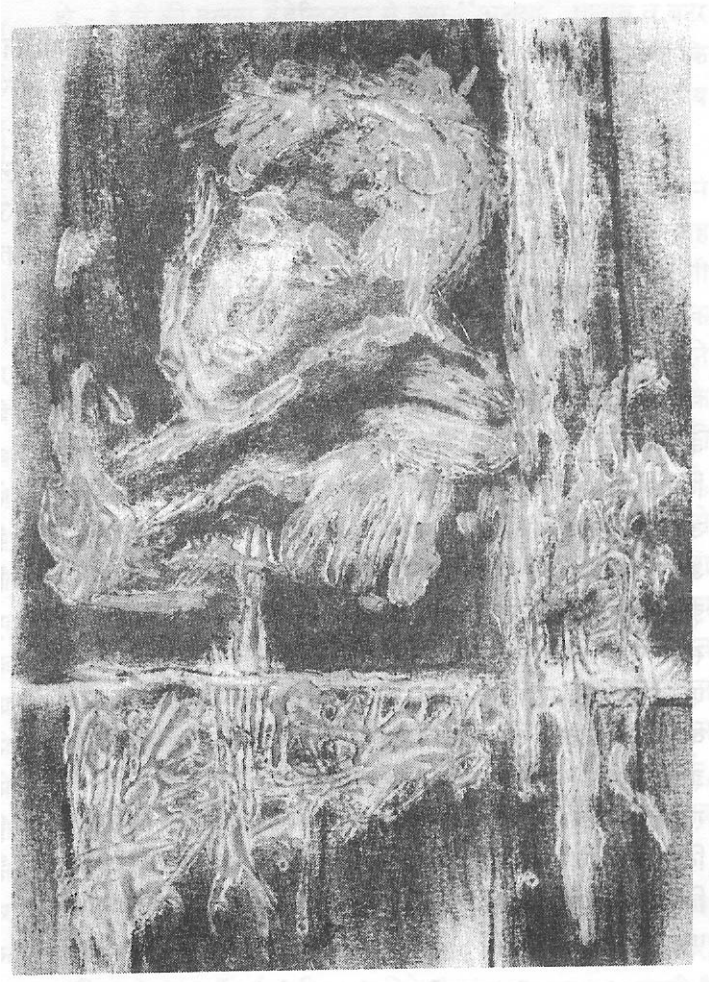

'बेटा' नाम से भी संबोधित करती है
दूर पूरब के किसी गांव में
जहां जाने में बहुत पैसा लगता है,
उसकी मां रहती है,
टी.वी. पर दिखने वाली तमाम मांओं से
बिल्कुल अलग,
ताज्जुब देखिये कि वह
उसका दिया नाम भी भूलने को है,
शायद समय के तकाजे को
वह जान गया है
बहुत जल्दी ! ◆